

SANP NUMA JINN (GUJARATI)



સાંપ નુમા જિન્ન

શૌર ગૌસે પાક ﷺ કે દીગર લાકિઆત



અમરે મુબારક ગૌસે આ'કમ

- ❁ બડી બડી આંખોં વાલા આદમી 2
- ❁ મુસીબત દૂર હોને કા અમલ 9
- ❁ નીંદ ઉઠાને કા અજબ નુસ્ખા 15
- ❁ કાદિરિયોં કે વિયે બિશારત કે બમદાદી ફૂલ 22
- ❁ મુશિદ કે 16 હુકૂક 23

مكتبة المدينة
(ممبائى)

શૌખે તરીકત અમીરે અહલે સુન્નત બાલિયે દા'વતે કરવામી દગરત અલ્લામા મૌલાના અબૂ જિલાલ

મુહમ્મદ ઇબ્રાહમ અત્તાર કાદિરી ર-ઝવી

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

કિતાબ પઢને ઠી દુઆ

અઝ : શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નાત, બાનિયે
દા'વતે ઈસ્લામી, હઝરતે અલ્લામા મૌલાના અબૂ બિલાલ
મુહમ્મદ ઈબ્ના અબ્દુલ કાદિરી ર-ઝવી دامت بركاته الفقيه

દીની કિતાબ યા ઈસ્લામી સબક પઢને સે પહલે ઝૈલ મેં દી
હુઈ દુઆ પઢ લીજિયે إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ જો કુઈ પઢેંગે યાદ રહેગા.

દુઆ યેહ હૈ :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

તરજમા: ઐ અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ હમ પર ઈલ્મો હિક્મત કે દરવાઝે ખોલ દે ઔર
હમ પર અપની રહમત નાઝિલ ફરમા ! ઐ અ-ઝમત ઔર બુતુર્ગા વાલે.

(المستطرف ج ١ ص ٤٠٠ دار الفكر بيروت)

નોટ : અવ્વલ આખિર એક એક બાર દુરુદ શરીફ પઢ લીજિયે.

તાલિબ ગમે મદીના

વ બકીઅ

વ મઝિફરત



13, શવ્વાલુલ મુકર્રમ સિ. 1428 હિ.

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
 آمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

“આંખ ગુમા જિજ્ઞાસ”

યેહ રિસાલા (આંખ ગુમા જિજ્ઞાસ)

શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, બાનિયે દા'વતે
 ઈસ્લામી હઝરત અલ્લામા મૌલાના અબૂ બિલાલ મુહમ્મદ ઈલ્યાસ
 અત્તાર કાદિરી ર-ઝવી ઝિયાઈ دَامَتْ بَرَكَاتُهُمْ أَفْعَالِهِمْ ને ઉદ્દૂ ઝબાન મેં
 તહરીર ફરમાયા હૈ.

મજલિસે તરાજિમ (દા'વતે ઈસ્લામી) ને ઈસ રિસાલે કો
 ગુજરાતી રસ્મુલ ખત મેં તરતીબ દે કર પેશ કિયા હૈ ઔર
 મક-ત-બતુલ મદીના સે શાએઅ કરવાયા હૈ. ઈસ મેં અગર કિસી
 જગહ કમી બેશી પાએં તો મજલિસે તરાજિમ કો (બ ઝરીઅએ મક્તૂબ,
 ઈ-મેઈલ યા SMS) મુત્તલઅ ફરમા કર સવાબ કમાઈયે.

રાબિતા : મજલિસે તરાજિમ (દા'વતે ઈસ્લામી)

મક-ત-બતુલ મદીના

સિલેક્ટેડ હાઉસ, અલિફ કી મસ્જિદ કે સામને, તીન દરવાઝા,

અહમદઆબાદ-1, ગુજરાત, ઈન્ડિયા

MO. 9374031409

e-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

﴿ 1 ﴾ सांप गुमा जिल्ल

शैतान लाप सुस्ती दिलाओ मगर आप येह रिसाला (30 सङ्घात)

मुकम्मल पढ लीजिये إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ आप का दिल सीने में जूम उठेगा.

दुइ शरीफ़ की इमीलत

हुजुरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुहुत्तशम, शाहेओ उमम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने रहमत निशान है : “जिस ने किताब में मुज पर दुइदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये इस्तिफ़ार (या'नी हुआओ मग्दिरत) करते रहेगे.”

(الْمَغْنَمُ الْاَوْسَطُ لِلطَّبْرَانِي ج 1 ص 497 حديث 1830)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

वलियों के सरदार, शहन्शाहे बगदाद, सरकारे गौसुल आ'उम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم आपने मद्रसे के अन्दर इजतिमाअ में बयान इरमा रहे थे के छत पर से ओक सांप आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى पर गिरा. सामिधन में बगदड मय गई, हर तरफ़ भौंकी हिरास झेल गया मगर सरकारे बगदाद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْجَوَاد आपनी जगह से न हिले. सांप आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى के कपडों में घुस गया और तमाम जिल्मे मुबारक से लिपटता हुवा गरीबान शरीफ़ से बाहर निकला और

इरमाने मुखाडा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर अक बार दुइडे पाक पढा **اَللّٰهُمَّ** اِيسْ اِيسْ
पर दस रडमतें बेजता है. (مس)

गरदन मुबारक पर लिपट गया. मगर कुरबान जाईये ! मेरे मुर्शिद शह-शाहे बगदाद عليه رَحْمَةُ اللهِ الْجَوَاد पर के ऊर्जा बराबर न घबराओ न ही बयान बन्द किया. अब सांप जमीन पर आ गया और दुम पर भडा हो गया और कुछ कड कर यला गया. लोग जम्भ हो गओ और अर्ज करने लगे : हुजूर ! सांप ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से क्या बात की ? ईशाद इरमाया : सांप ने कडा : “मैं ने बहुत सारे औलियाउल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى को आजाया मगर आप जैसा किसी को नहीं पाया.”

(مُلَخَّص از بَهْجَةُ الْأَسْرَارِ لِلشَّيْطَانِي ص ۱۶۸)

वाड क्या मरतबा ऐ गौस हें बावा तेरा

बिये बियों के सरो से कदम आ'ला तेरा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे ईस्लामी भाईयो ! मा'लूम हुवा वोड कोई आम सांप नहीं बल्के सांप नुमा जिन्न था जिस ने हमारे गौसे आ'जम اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ की कोशिश की थी और عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْأَكْرَم आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى साबित कदम रहे.

﴿2﴾ बडी बडी आंजों वाला आदमी

ईसी सांप नुमा जिन्न की दूसरी² षौङनाक हिकायत सुनिये और गौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की ईस्तिकामत पर अकदीत से सर धुनिये युनान्ये हुजूर शह-शाहे बगदाद सरकारे गौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ इरमाते हें : अक बार मैं जामेओ मन्सूर में मसरुडे नमाज था के

इरमाने मुसलमा : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : જો શાપ્સ મુઝ પર દુરુદ પાક પઢના ભૂલ गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया. (प्राण)

वोही सांप आ गया और उस ने मेरे सजदे की जगह पर सर रख कर मुंह जोल दिया ! मैं ने उसे हटा कर सजदा किया, मगर वोह मेरी गरदन से लिपट गया फिर वोह मेरी अेक आस्तीन में घुस कर दूसरी आस्तीन से निकला, नमाज मुकम्मल करने के बा'द जब मैं ने सलाम कैरा तो वोह गाँब हो गया. दूसरे रोज जब मैं फिर उसी मस्जिद में दाखिल हुवा तो मुझे अेक बडी बडी आंभों वाला आदमी नजर आया मैं ने उसे देख कर अन्दाजा लगा लिया के येह शप्स ईन्सान नहीं बल्के कोई जिन्न है, वोह जिन्न मुज से कलने लगा के मैं आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को तंग करने वाला वोही सांप हूँ, मैं ने सांप के रूप में बहुत सारे औलियाउल्लाह رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ تَعَالَى को आज़माया है मगर आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ जैसा किसी को भी साबित कदम नहीं पाया, फिर वोह जिन्न आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के हस्ते हक परस्त पर ताँब हो गया.

(نَهْجَةُ الْأَسْرَارِ ص ١٦٩ دارالكتب العلمية بيروت)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

हुअे देख कर तुज को काफ़िर मुसलमां

बने संगदिल मोम सां गौसे आ'उम (कबालअे बजिश)

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! हमारे मुर्शिदे कामिल, सरकारे बगदाद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى की भी क्या शान है ! आह ! अेक हमारी नमाज है के हम पर मक़्भी भी बैठ जाअे तो परेशान हो जाअें, मा'मूली पारिश भी हम से बरदाश्त न हो सके. ईस हिकायत से येह भी मा'लूम हुवा के जिन्नात भी हमारे गौसुल आ'उम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم के गुलाम बन जाते हैं.

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : **عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَشِيرَةُ أَبِي رَسُولِي** : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइद पाक न पढा तलकीक वोह बढ भप्त हो गया. (उंन)

﴿3﴾ शैतान का पतरनाक वार

सरकारे बगदाદ હુઝૂરે ગૌસે પાક **حَمْدُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ફરમાતે હૈં : એક બાર મેં કિસી જંગલ કી તરફ નિકલ ગયા ઓર કઈ રોઝ તક વહાં પડા રહા. ખાને પીને કો કુછ ભી ન હોતા થા. મુઝ પર ખ્યાસ કા સપ્ત ગ-લબા થા, એસે મેં મેરે સર પર એક બાદલ કા ટુકડા નુમૂદાર હુવા, ઉસ મેં સે કુછ બારિશ કે કતરે ગિરે જિન્હેં મેં ને પી લિયા, ઈસ કે બા'દ બાદલ મેં એક નૂરાની સૂરત ઝાહિર હુઈ જિસ સે આસ્માન કે કનારે રોશન હો ગએ ઓર એક આવાઝ ગૂંજને લગી : “ઐ અબ્દુલ કાદિર ! મેં તેરા રબ હૂં, મેં ને તમામ હરામ ચીઝેં તેરે લિયે હલાલ કર દી.” મેં ને **أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ** પઢા, એક દમ રોશની ખત્મ હો ગઈ ઓર ઉસ ને ધૂએં કા રૂપ ધાર લિયા ઓર આવાઝ આઈ : “ઐ અબ્દુલ કાદિર ! ઈસ સે કબ્લ મેં સત્તર⁷⁰ ઔલિયા કો ગુમરાહ કર ચુકા હૂં મગર તુઝે તેરે ઈલ્મ ને બચા લિયા.” આપ **حَمْدُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ફરમાતે હૈં : મેં ને કહા : ઐ મરદૂદ ! મુઝે મેરે ઈલ્મ ને નહીં બલકે મેરે રબ **عَزَّ وَجَلَّ** કે ફઝ્લ ને બચા લિયા. (ઐઝન, સ. 228)

હૂં ઈમાન કે સાથ દુન્યા સે રુખ્સત

યેહી અર્ઝ હૈં આખિરી ગૌસે આ'ઝમ (કબાલએ બખ્શિશ)

ચોર વહીં આતા હૈ જહાં માલ હો

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! વાકેઈ શૈતાન બડા મક્કાર વ અચ્ચાર હૈ, વોહ તરહ તરહ કે શો'બદે યા'ની જાદૂઈ કરતબ ભી દિખાતા હૈ, ઈસ કે વાર સે હમેશા ખબરદાર રહના ચાહિયે, અપની અક્લ વ

इरमान गुस्ताडा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम
दुइदे पाक पढा उसे क्रियामत के दिन मेरी शकायत मिलेगी. (अल-शुआबा)

होशियारी पर अे'तिमाद करने के बजाअे **اَللّٰهُمَّ** के इजलो करम पर नजर रखनी चाहिये. जिस के पास माल होता है उस के पास थोर आता है और जिस के पास दौलते धिमान है उस के पास धिमान का लुटेरा शैतान जरूर आता है नीज जिस के पास धिमान जितना मजबूत होगा उस के पास उसी कदर नेकियों के भजाने की भी कसरत होगी लिहाजा वहां शैतान बहुत जियादा जोर लगायेगा. हमारे पीरो मुर्शिद हुजुरे गौसे आ'जम **رَحْمَةُ اللهِ الْكَرِيمِ** के पास धिमान व आ'माल के भजाने के अम्बार को देख कर शैतान ने डाके डालने की मुतअदद बार कोशिश की मगर वोह नाकाम व ना मुराद ही रहा.

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿4﴾ शैतान के मजीद हमले

पीरों के पीर, पीर दस्त गीर, रोशन जमीर, कुल्बे रब्बानी, महबूबे सुब्हानी, पीरे ला सानी, गौसुस्स-मदानी, पीरे पीरां, भीरे भीरां, अशशैष सख्यिद अबू मुहम्मद अब्दुल कादिर जलानी इरमाते हैं : मैं जिन दिनों शबो रोज जंगल में रहा करता था, शयातीन षौफनाक शकलों में झौंज दर झौंज तरह तरह के हथियारों से दैस हो कर मुझ पर हम्ला आवर होते, मुझ पर आग बरसाते, मैं **اَللّٰهُمَّ** की मदद से उन के पीछे दौडता तो वोह मुन्तशिर हो कर भाग जाते, कभी कोई शैतान अकेला आ कर मुझे तरह तरह से डराता, धम्काता और कहता यहां से यले जाओ. मैं उस को

इरमाने मुस्ताफा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्इद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जड़ की. (عمران)

जोरदार तमांया मार देता तो वोह भागने लगता, फिर मैं पढ़ता तो वोह जल जाता. (औमन, स. 165)

दिल पे कन्दा हो तेरा नाम के वोह दुर्इदे रज्जम¹

उलटे ही पाँउं फ़िरे देभ के तुगरा तेरा (हदाईके बफ़िशश)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿5﴾ गैबी हाथ

दुजुरे गौसे आ'जम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْأَكْرَمِ इरमाते हैं : ओक बार निहायत भौइनाक सूरत वाला ओक शप्स जिस से बढबू के लब्डे उठ रहे थे आ कर मेरे सामने षडा हो गया और कडने लगा : मैं ँष्लीस हूं और आप की भिदमत करने के लिये लाजिर हुआ हूं क्युंके आप ने मुझे और मेरे येलों को थका दिया है. मैं ने कडा : दइअ हो. उस ने ँन्कार किया. ँतने में गैब से ओक हाथ नुमूदार हुआ जिस ने उस के सर पर औसी जोरदार जर्ब लगाई के वोह जमीन में धंस गया मगर फिर उस ने आग का शो'ला हाथ में ले कर मुझ पर हम्ला कर दिया. ँतने में ओक निकाल पोश साहिब घोडे पर सुवार तशरीफ़ लाओ और उन्हों ने मुझे तलवार दी. येह देभ कर शैतान भाग षडा हुआ.

(بَهْجَةُ الْأَسْرَارِ ص ١٦٦)

बादलों से कहीं रुकती है कडकती बिजली

ढालें छंट जाती हैं उठता है जो तैगा तेरा (हदाईके बफ़िशश)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

¹ : धुत्कारा हुआ थोर या'नी मरदूद शैतान.

इरमान मुसलमा صلى الله تعالى عليه و آله وسلم : जे मुज परे राजे जुमुआ दुइद शरीफ पढेगा मे कियामत क दिन उस की शकाअत करेगा. (कोरान)

《6》 शैतान के जाल

सरकारे बगदाद हुजुरे गौसे पाक رحمة الله تعالى عليه इरमाते हैं :
 एक बार मैं ने देखा के शैतान दूर बैठा अपने सर पर जाक उडा रहा है और रोते हुअे कल रहा है : “अै अब्दुल कादिर ! मैं आप से मायूस हो गया हूं.” मैं ने कहा : अै मलजिन ! दइअ हो, मैं तुज से कभी भी बे षौफ नही हो सकता. वोह बोला : आप की येह बात मेरे लिये सब से जियादा गिरां (या'नी सप्त) है. इस के बा'द उस ने मुज पर बहुत सारे जाल, इन्दे और लीले जाहिर किये और मेरे इस्तिस्सार (या'नी पूछने) पर बताया के येह दुन्या के जाल हैं जिन से मैं आप जैसों का शिकार किया करता हूं. मैं एक साल तक जिदो जुहद करता रहा, यहां तक के वोह सारे जाल टूट गअे. फिर मेरे ईद गिद बहुत सारे अस्बाब जाहिर हुअे. मैं ने पूछा : येह क्या हैं ? तो कहा गया के येह आप से मु-तअद्लिक मज्लूक के अस्बाब (या'नी मज्लूक की महब्बतें वगैरा) हैं. युनान्ये इस मुआ-मले में भी मैं ने मजीद एक साल तवज्जोह (जिदो जुहद) की हत्ता के वोह जाल भी सब के सब टूट गअे.

(بَهْجَةُ الْأَسْرَارِ ص ١٦٦)

जिस को ललकार दे आता हो तो उलटा फिर जाये

जिस को युमकार ले छिर फिर के वोह तेरा तेरा (हदाईके बज्शिश)

सुधरने की कोशिश तर्क नहीं करनी चाहिये

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! वाकेई नइसो शैतान से पीछा

इरमाने मुसल्लाहा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुइदे पाक की कसरत करो बेशक ये छ तुम्हारे लिये तदारत है. (इस्लाम)

छुडाना आसान नही. हमारे गौसुल आ'उम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने इस से नजात पाने के लिये सालहा साल तक जिद्दो जुहद इरमाई यहां उन लोगो के लिये बडा दर्से ईब्रत है जो बहुत जल्द हिम्मत हार जाते और बोल पडते हैं के हम ने तो बडे जतन किये, काई अर्सा म-दनी माहोल में आशिकाने रसूल की सोहबत ईप्तियार की, म-दनी काइलो में भी सइर किये मगर नइसो शैतान से जान न छूटी. **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की रहमत पर नजर रखते हुअे ईस्लाह के लिये उम्र भर कोशिश जारी रखनी चाहिये.

तू कुव्वत दे में तन्हा काम बिस्तार

बदन कमजोर हिल काहिल है या गौस (हदाईके बख्शिश शरीफ)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

﴿7﴾ सई रात में थालीस⁴⁰ बार गुसल

“बहुजतुल असरार शरीफ” में है, सरकारे बगदाद हुजुरे गौसे पाक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى इरमाते हैं : मैं “कफ” के जंगलो में बरसो रखा हूं, दरफ्त के पत्तो और बूटियो पर मेरा गुजारा होता. मुजे पहनने के लिये हर साल अक शप्स सूई (या'नी गिन) का अक जुब्बा ला कर देता था जिस को मैं पहना करता था. मैं ने दुन्या की महब्बत से नजात हासिल करने के लिये हजार जतन किये, मैं गुमनाम रहा, मेरी पामोशी के सबब लोग मुजे गूंगा, नादान और दीवाना कहते थे, मैं कांटो पर नंगे पाउं चलता था, भौइनाक गारो और लयानक वादियो में बे जिजक दाखिल हो जाता. दुन्या बन संवर कर मेरे सामने जाहिर होती मगर اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّ وَجَلَّ मैं उस की तरफ ईल्तिफात

इरमाने मुस्तहा. صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जेडा भी डो मुज पर दुरेद पढो के तुम्हारा दुरेद मुज तक पडोयता है. (طبرانی)

(या'नी तवज्जोड) न करता. मेरा नईस कभी मेरे आगे आजिजी करता के आप की जो मरजी होगी वोही करुंगा और कभी मुज से लडता. **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुजे ईस पर इत्ड नसीब करता. मैं मुदतों "मदाईन" के बियाबानों में रहा और अपने नईस को मुज-डदात में लगाता रहा. अक साल तक गिरी पडी यीजें भाता और बिडकुल पानी न पीता फिर अक साल सिई पानी पर गुजारा करता और गिरी पडी यीज या कोई और गिजा न भाता फिर अक साल बिगैर कुछ भाअे पिये इके से गुजारता. मुज पर सप्त आजमाईशें आतीं, अक बार सप्त सई की रात मेरा यूं ईम्तिहान लिया गया के बार बार आंभ लग जाती और मुज पर गुस्ल ईर्ज हो जाता, मैं ईरन नहर पर आता और गुस्ल करता ईस तरड मैं ने उस अक रात में यालीस⁴⁰ बार गुस्ल किया.

(مَلَّخَسَ أَرْبَعَةَ الْأَشْرَارِ لِلشَّطْرُونِ ص ١٦٥)

कडा तूने जो मांगोगे मिलेगा

रज तुज से तेरा साईल है या गौस

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

मुसीबत दूर होने का अमल

डजरते अल्लामा ईमाम शा'रानी **قَدِّسَ سِرُّهُ النَّوْرَانِي** "तबकाते कुब्रा" में हुजुरे गौसुल आ'जम **رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم** का येड ईशदि गिरामी नकल करते हैं : ईब्तिदाअन मुज पर बहुत सप्तियां रभी गई, जब सप्तियां ईन्तिहा को पडोय गई तो मैं आजिज आ कर जमीन पर लैट गया और मेरी जभान पर कुरआने पाक की येड दो² आयाते

इरमाने मुखडा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर दस मरतबा दुर्रदे पाक पढा **اَعْلَاهُ** (उस पर सो रडभते नाजिल इरमाता है. (प्राण))

मुभा-रका जारी हो गई :

فَإِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۗ إِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۗ ت-ज-मअे क-जुल ईमान : तो बेशक
दुशवारी के साथ आसानी है बेशक
(प ३०, म नश्रः ७-६)
दुशवारी के साथ आसानी है.

إِن آيَاتِ اللَّهِ لَظَاهِرَةٌ لِّلَّذِينَ يَأْتِيهِمُ الْيَقِينُ ۗ إِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۗ إِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۗ
मुज से दूर हो गई. (الطَّبَقَاتُ الْكُبْرَى ج ١ ص ١٧٨ ملخصاً دار الفكر بيروت)

वाह क्या मरतबा ऐ गौस हें बावा तेरा

बिंये बिंयों के सरों से कदम आ'वा तेरा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

हम भी कोशिश करें

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! देखा आप ने ! हमारे गौसुल
आ'उम **عَزَّوَجَلَّ** का कुर्ब पाने
और अपने नानाजान, रडभते आ-लमियान **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**
को भुश इरमाने, नईसो शैतान पर गालिब आने, दुन्या की मडुलत
से पीछा छुडाने, गुनाहों के अमराज से भुद को बचाने, मज्लूके भुद
को राडे रास्त पर लाने, मुबद्लिग का शरफ पाने, नेकी की
दा'वत की दुन्या में धूम मचाने और बे शुमार कुइफार को दामने
ईस्लाम में दाबिल इरमाने के लिये सालडा साल तक जिद्दो जुदद
इरमाई. पैर हम दुजुरे गौसे पाक **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की तरल मुज-उदात
तो करने से रडे मगर हिम्मत हारे बिगैर थोडी बहुत कोशिश तो

इरमाने मुस्ताफा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुइद शरीफ न पढे तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शप्स है. (ज़िरीय)

जारी रખें.

सय हे ईन्सान को कुछ षो के मिला करता है

आप को षो के तुझे पायेगा जेया तेरा (जोके ना'त)

﴿8﴾ 25 बरस जंगलों में.....

सरकारे बगदाद हुजुरे गौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की मडब्बत का दम भरने वाले ईस्लामी भाईयो ! **अब्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की रिजा के लिये सरकारे गौसे आ'उम رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم ने ईबादतों और रियाजतों में ईराक के जंगलों में 25 बरस गुजार दिये. काश ! हमें भी तब्दीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक “दा'वते ईस्लामी” के सुन्नतों की तरबियत की खातिर गाउं ब गाउं, शहर ब शहर और मुल्क ब मुल्क सफ़र करने वाले म-दनी काफ़िलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र करना नसीब हो जाअे.

कोई सालिक है या वासिल है या गौस

वोह कुछ भी हो तेरा साईल है या गौस (हदाईके बफ़िश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿9﴾ अमीन से युन युन कर टुकडे जाना

सरकारे बगदाद हुजुरे गौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ इरमाते हैं : मैं शहर में जाने के ईरादे से गिरे पडे टुकडे या जंगल की कोई घास या पत्ती उठाना याहता और जब देभता के दूसरे कु-करा भी ईसी की

इरमाने मुस्ताफ़ा عَلِيٌّ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक पाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुइदे पाक न पड़े. (१७)

तलाश में हैं तो अपने ईस्लामी भाईयों पर ईसार करते हुअे न उठाता बल्के यूँही छोड देता ताके वोह उठा कर ले जाओ और जुद भूका रहता. जब भूक के सबभ कमजोरी उद से बढी और करीबुल भौत हो गया तो मैं ने झूल वाले बाजार से अेक खाने की चीज जो जमीन पर पडी थी उठाई और अेक कोने में जा कर उसे खाने के लिये बैठ गया. ईतने में अेक अ-जमी नौ जवान आया, उस के पास ताजा रोटियां और भुना हुवा गोशत था वोह बैठ कर खाने लगा, उस को देख कर मेरी खाने की ख्वालिश अेक दम शिदत ईप्तिहार कर गई, जब वोह अपने खाने के लिये लुकमा उठाता तो भूक की बेताबी की वजह से बे ईप्तिहार जो याहता के मैं मुंह खोल दूं ताके वोह मेरे मुंह में लुकमा डाल दे. आखिर मैं ने अपने नईस को डांटा के “बे सभ्री मत कर **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** मेरे साथ है, याहे भौत आ जाओ मगर मैं ईस नौ जवान से मांग कर हरगिज नहीं पाऊँगा.”

यकायक वोह नौ जवान मेरी तरफ़ मु-तवज्जेह हुवा और कहने लगा : भाई ! आ जाईये आप भी खाने में शरीक हो जाईये ! मैं ने ईन्कार किया, उस ने ईस्सार किया, मेरे नईस ने मुझे खाने के लिये बहुत उभारा लेकिन मैं ने झिर भी ईन्कार ही किया मगर उस नौ जवान के पैहम ईस्सार पर मैं ने थोडा सा खाना खा लिया, उस ने मुज से पूछा : आप कहां के रहने वाले हैं ? मैं ने कहा : **खुदान** का. वोह बोला : मैं भी **खुदान** ही का हूं. अख्श येह बताईये आप मशहूर आहिद हजरते सय्यिद अबू अब्दुल्लाह सौ-मई **عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ الْكُوفَى** के नवासे अब्दुल कादिर को जानते हैं ? मैं ने कहा : वोह तो मैं ही हूं.

इरमाने मुस्ताहा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझे पर रोजे जुमुआ दा सो बार दुइद पाक पढा उस
के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (क़ुरआन)

येह सुन कर वोह बे करार हो गया और कहने लगा के मैं बगदाद आने लगा तो आप की अम्मीजान ने आप को देने के लिये मुझे 8 सोने की अशरकियां दी थीं, मैं यहां बगदाद आ कर तलाशता रहा मगर आप का किसी ने पता न दिया यहां तक के मेरी अपनी तमाम रकम खर्च हो गई, तीन दिन तक मुझे खाने को कुछ न मिला, मैं जब भूक से निढाल हो गया और मेरी जान पर बन गई तो मैं ने आप की अमानत में से येह रोटियां और लुना हुआ गोश्त खरीदा. हुआ ! आप भी बखुशी ऐसे तनावुल इरमाईये के येह आप ही का माल है पहले आप मेरे मेहमान थे और अब मैं आप का मेहमान हूँ, बकिय्या रकम पेश करते हुआ बोला : मैं मुआफ़ी का तलब गार हूँ, मैं ने इजतिरारी हालत में आप की रकम ही से खाना खरीदा था. मैं बहुत खुश हुआ. मैं ने बया हुआ खाना और मज़ीद कुछ रकम उस को पेश की, उस ने कबूल की और चला गया.

(الدّیْل علی طبقات الحنابلة ج ۳ ص ۲۰۰ دارالکتب العلمیة بیروت)

तलब का मुंह तो किस काबिल है या गौस

मगर तेरा करम काबिल है या गौस इरमाईके बख़िश शरीफ़

ईसा की अमीम इमीलत

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! इस हिकायत में हमारे लिये इब्रत के बे शुमार म-दनी इल हें, देखिये तो सही ! ओक तरफ़ हमारे पीरो मुर्शिद गौसुल आ'उम رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने सप्त तंगदस्ती और झाका मस्ती के बा वुजूद गिजा और रकम के

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुइद शरीक पढो अब्बाह (अनुरोध) तुम पर रहमत (अनुरोध)।

मुआ-मले में बे मिसाल ईसार से काम लिया जबके दूसरी तरफ़ गौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की अकीदत का दम भरने वाले ना लाईक मुरीद हैं के बूके रहने की तौफ़ीक तो दूर रही, बिलइर्र ग्यारहवीं शरीक की नियाज की बिरयानी ही सामने आ जाये तो हिर्स का ऐसा ग-लबा तारी हो जाये के जो याहे बस सारे का सारा थाल में ही भा डालूं, ओटी तो कुजा किसी को यावल का अेक दाना भी न जाने पाये ! ऐ आशिकाने गौसे आ'जम ! आप को जब कभी दूसरों के साथ मिल कर खाने का इत्तिफ़ाक हो, बडे बडे निवाले बिगैर यभाये जल्ल जल्ल निगलने और उम्दा ओटियां अपनी तरफ़ सरका लेने की हिर्स गालिब आये उस वक्त अपने पीरो मुर्शिद गौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की बयान कर्दा डिक्कयत के साथ साथ येह इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ भी जेहून में दोहरा लीजिये : “जो शम्स उस चीज को जिस की ખુद ईसे डायत हो दूसरे को दे दे तो अब्बाह (اتحاف السادة للزبيدي ج ٩ ص ٧٧٩) नीज ईजाने सुन्नत जिल्ल अव्वल सईहा 482 पर मरकूम डजरते सय्यिहुना अबू सुलैमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का इनायत इरमूदा येह म-दनी इल भी कबूल इरमा लीजिये : “नइस की किसी ख्वाइश को छोड देना 12 माह के रोजों और रात की इबादतों से भी बढ कर दिल् के लिये नइअ बपश है.”

(احياء العلوم ج ٣ ص ١١٨ دارصادر بيروت)

मेरी हिर्स की आदते बढ मिटा दे

मेरे गौस का वासिता या इलाही

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَيَّ مُحَمَّد

इरमान मुश्क़ि صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज़ पर कसरत से दुरुद पाक पढो बशक तुम्हारा मुज़ पर दुरुद पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मज़ि़रत है. (पान्नाम)

«10» नींद उडाने का अजुब गुस्सा

सरकारे गौसुल आ'उम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْأَكْرَم ने'मत और अपने गुलामों की नसीहत के लिये इरमाते हैं : الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ मैं पच्चीस²⁵ साल तक इराक के वीरानों में इरता रहा और यालीस⁴⁰ साल तक इशा की नमाज़ के वुजू से इज की नमाज़ अदा की. पन्धरह¹⁵ साल तक रोजाना बा'दे नमाजे इशा नवाज़िल में अक कुरआने पाक भत्म करता रहा. इब्तिदाअन मैं अपने बदन पर रस्सी बांध कर उस का दूसरा सिरा दीवार में गडी हुई भूटी से बांध दिया करता था ताके अगर नींद का ग-लबा हो तो इस के लटके से आंघ जुल जाये.

(بَهْجَةُ الْأَسْرَارِ ص ۱۱۸)

अक रात जब मैं ने अपने मा'मूलात का कस्ह किया तो नफ़स ने सुस्ती करते हुअे थोडी देर सो जाने और बा'द में उठ कर इबादत भजा लाने का मश्वरा दिया, जिस जगह टिल में येह भयाल आया था उसी जगह और उसी वक्त अक कदम पर भडे हो कर मैं ने अक कुरआने करीम भत्म किया.

(بَهْجَةُ الْقَاوِرِيَةِ)

गिराने लगी है हमें लजिशे पा

संभालो ! लईकों को या गौसे आ'उम

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

गौसुल आ'उम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْأَكْرَم की मलुभत का हम भरने

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : ज़े मुज़ पर अक़ दुरेद शरीफ़ पढता हे अल्लाह उसे क़ विये अक़ कीरात अज़ लिफ़ता हे और कीरात उहुद पहाड जितना हे. (मज़ज़)

वालो! देभा आप ने! सरकारे बग़दाद हुज़ूरे गौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ क़िस क़दर एबादत का अेडतिमाम इरमाते थे अब अगर हम से क़िस पांय वक्त की नमाज़ ली न पढी जाये तो हम क़िस क़िस्म के आशिकाने गौसुल आ'ज़म हैं ?

मुज़े अपनी उल्फ़त में ऐसा गुमा दे

न पाठिं क़िर अपना पता गौसे आ'ज़म (जौके ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿11﴾ साहिबे क़ध की एमदाद

पीरों के पीर, पीर दस्त गीर, रोशन ज़मीर, शैख़ अब्दुल कादिर ज़ुलानि كَدَسِّ سَيِّدِ سَيِّدَةِ الرَّبَّانِيّ اَبरोज़ बुध 27 जुल डिज्जतिल डराम सि. 529 डि. को “शूनीज़ियड” के क़ब्रिस्तान में अपने उस्ताजे मोडतरम डज़रते सय्यिदुना शैख़ इम्माद رَحْمَةُ اللهِ الْجَوَادِ के मज़ार शरीफ़ पर उ-लमा व कु-करा के काफ़िले के डमराड तशरीफ़ ले आये और काफ़ी देर तक षडे षडे दुआ इरमाते रहे यहां तक के धूप बहुत तेज़ हो ग़ई. जब लौटे तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ क़े येडूरअे अन्वर पर बशाशत के आसार थे. जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से एंस क़दर तवील दुआ का सबब दरयाफ़्त किया गया तो इरमाया : 15 शा'बानुल मुअज़्ज़म सि. 499 डि. अरोज़ ज़ुमुआ नमाजे ज़ुमुआ अदा करने के लिये एंस मज़ार शरीफ़ में आराम इरमाने वाले मेरे उस्ताजे गिरामी सय्यिदुना शैख़ इम्माद رَحْمَةُ اللهِ الْجَوَادِ के साथ अक़ काफ़िला जानिबे “जामिउर्रुसाफ़ड” रवां दवां था. रास्ते में जब अक़ नडूर के

इरमाणे मुस्तहा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुज पर दुइदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये ईस्तिग़ार करते रहेंगे. (ज़ुमर)

पुल पर से गुज़रे तो शैब उम्माद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْجَوَاد ने अयानक मुजे धक्का दे कर नहर में गिरा दिया, सप्त सर्दियों के दिन थे, मैं ने बिस्मिल्लाह पढ़ कर गुस्ले जुमुआ की निश्चयत कर ली, जूतूं पानी से निकला और अपना सूफ़ (या'नी गिन) का जुब्बा नियोडा और काईले से ज़ा मिला. शैब उम्माद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْجَوَاد के मुरीद जुश तबई करने लगे, आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने उन्हें डांटा और इरमाया : मैं ने अब्दुल कादिर का ईम्तिहान लिया जिस में उन को पहाड की तरह मुस्तहकम पाया. हुज़रे गौसे आ'उम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَرِيم ने मज़ीद इरमाया के मैं ने अपने उस्ताज़ सय्यिदुना शैब उम्माद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْجَوَاد को उन के मज़ारे पुर अन्वार में लीरे और जवाहिरात के लिबास में मल्बूस सर पर याकूत का ताज पहने, हाथों में सोने के कंगन और पाउं में सोने के ना'लैने शरीकैन में मुला-हज़ा किया, मगर तअज्जुब जैज़ बात जो देभी वोह येह थी के उन का दायां (या'नी सीधा) हाथ काम नहीं कर रहा था ! मेरे ईस्तिफ़सार पर बताया : "येह वोही हाथ है जिस से मैं ने आप को नहर में धकेला था, क्या आप मुजे मुआफ़ करते हैं?" जब मैं ने मुआफ़ कर दिया तो उन्होंने ने कडा के आप अब्बाह عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में हुआ इरमा दीजिये के मेरा दायां हाथ दुरुस्त हो जाये. लिहाज़ा मैं अब्बाह عَزَّ وَجَلَّ से हुआ मांगता रहा और पांच हजार अस्ताबे मज़ार औलियाउल गफ़ार अपने अपने मज़ार में आमीन कहते और मेरी सिफ़ारिश करते रहे यहां तक के अब्बाह عَزَّ وَجَلَّ ने उन का दायां हाथ दुरुस्त इरमा दिया जिस से उन्होंने ने जुश हो कर मुज से मुसा-इहा किया.

बगदादे मुअल्ला में येह ज़बर जब मशहूर हुई तो सय्यिदुना

ફરમાબે મુસ્લિમ : عَلِيُّ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरद पाक पढा **अल्लाह** उस उर उर दस रदमतें भेजता है. (म)

શૈખ હમ્માદ **عَلِيهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْجَوَاد** કે બા'ઝ મુરીદીન પર શાક ગુઝરા ઓર વોહ તસ્દીક કે લિયે દરબારે ગૌસિયા મેં હાઝિર હુએ મગર આપ **عَلِيهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى** કી હૈબત કે સબબ કિસી કો પૂછને કી હિમ્મત ન હુઈ. પીરોં કે પીર, રોશન ઝમીર, હુઝૂરે ગૌસુલ આ'ઝમ દસ્ત ગીર **عَلِيهِ رَحْمَةُ الْقَدِير** ને ઉન લોગોં કે દિલોં કા હાલ જાન લિયા ઓર ખુદ હી ઈશાદ ફરમાયા : આપ હઝરાત દો² શૈખ પસન્દ કર લેં જો આપ કા યેહ મસ્અલા હલ કરેં. યુનાન્થે યેહ મુઆ-મલા હઝરતે સય્યિદુના શૈખ યૂસુફ હમદાની ઓર હઝરતે સય્યિદુના શૈખ અબ્દુરહમાન કુર્દી **رَحْمَتُهُمَا اللَّهُ تَعَالَى** જો કે અસ્હાબે કશફ થે ઉન્હેં સોંપ દિયા ગયા ઓર હુઝૂરે ગૌસુલ આ'ઝમ **عَلِيهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم** કી ખિદમત મેં અર્ઝ કર દી ગઈ કે હમ આપ કો જુમુઆ તક મોહલત દેતે હેં કે યેહ દોનોં² હઝરાત આપ કી તસ્દીક કર દેં. હઝરતે સય્યિદુના ગૌસે આ'ઝમ **عَلِيهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم** ને ફરમાયા : **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** : આપ હઝરાત યહાં સે ઉઠને ભી ન પાઝેંગે કે મસ્અલા હલ હો જાએગા. યેહ ફરમા કર હુઝૂરે ગૌસે આ'ઝમ **عَلِيهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم** ને સરે અન્વર ઝુકા લિયા. તમામ હાઝિરીન ને ભી અપના સર ઝુકા લિયા. ઈતને મેં હઝરતે સય્યિદુના શૈખ યૂસુફ હમદાની **قَدَسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِي** પા બરહના (યા'ની નંગે પાઉં) જલ્દી જલ્દી તશરીફ લાએ ઓર એ'લાન કિયા કે **أَللَّهُ** કે હુકમ સે અભી અભી મુઝ પર શૈખ હમ્માદ **عَلِيهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْجَوَاد** ઝાહિર હુએ ઓર હુકમ દિયા કે ફૌરન શૈખ અબ્દુલ કાદિર જીલાની **قَدَسَ سِرُّهُ النَّوْرَانِي** કે મદ્રસે મેં જા કર સબ કો બતા દો : “શૈખ અબ્દુલ કાદિર જીલાની **قَدَسَ سِرُّهُ النَّوْرَانِي** ને આપ હઝરાત કો મેરે બારે મેં જો કુછ બતાયા હૈ વોહ સય હૈ.” ઈતને મેં હઝરતે સય્યિદુના શૈખ અબ્દુરહમાન કુર્દી **عَلِيهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي** ભી

इरमाणे मुस्तफा : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुज पर दुइदे पाक पढेना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया. (طريق)

आ गमे और उन्हीं ने भी हजरते सय्यिदुना शैख यूसुफ़ हमदानी की तरह ही कहा. ईस पर तमाम हजरात ने हुजुरे गौसे आ'जम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم से मुआफ़ी मांगी. (تَهْجَةُ الْأَشْرَارِ ص १०७)

जो वली कबल थे या बा'द हुअे या होंगे

सभ अहब रफते हें दिल् में मेरे आका तेरा (हदाईके बअिशा शरीफ)

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! ईस ईमान अफ़रोज हिकायत में हमारे लिये हिकमत के बे शुमार म-दनी कूल हें. मिन जुम्हा येह के ईस्लामी उस्ताज या पीरो मुर्शिद की तरह से कभी कोई अैसा मुआ-मला पेश आ जाअे जो समज में न आता हो तो उस पर सभ्रो तहम्मूल का दामन थामे रहे न के अपने उस्ताज या पीर की मुजा-लफ़्त कर के अपनी आभिरत दाव पर लगा दे जैसा के हमारे गौसे आ'जम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم के उस्ताजे गिरामी فَدْرَسُ سَيِّدَةِ النَّسَائِي ने उन्हें सप्त सर्दी में नहूर में गिरा दिया फिर भी आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने सभ्र के साथ साथ गुस्वे जुमुआ की निय्यत भी इरमा ली और जभान पर हई शिकायत न लाअे.

पीर पर अे'तिराज लाईसे जरबादी है

यकीनन जो दीनी तालिबे ईल्म अपने ईस्लामी उस्ताज पर और जो मुरीद अपने पीरो मुर्शिद पर अे'तिराज करता है वोह ईजाने ईल्मो मा'रिफ़त से महज़म रहता बल्के हलाकत के अभीक (या'नी गहरे) गढे में जा पडता है. युनान्थे मेरे आका आ'ला हजरत, ईमामे अहले सुन्नत, वलिये ने'मत, अजीमुल भ-र-कत, अजीमुल मर्तबत, परवानअे शम्अे रिसालत, मुजदिदे दीनो मिल्लत, हामिये

ફરમાન મુસ્લિમ عَلِيٌّ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस क पास मेरा ठिक हुवा और उस न मुज पर दुइद पाक न पढा तडकीक वोड भद भप्ट हो गया. (उंन)

સુન્નત, માહિયે બિદઅત, આલિમે શરીઅત, પીરે તરીકત, બાઈસે ખૈરો બ-ર-કત, હઝરતે અલ્લામા મૌલાના અલહાજ અલ હાફિઝ અલ કારી શાહ ઈમામ અહમદ રઝા ખાન عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ الرَّحْمَانِ નક્લ ફરમાતે હેં :

“પીરોં પર એ’તિરાઝ સે બચે કે યેહ મુરીદોં કે લિયે ઝહરે કાતિલ હૈ, કમ કોઈ મુરીદ હોગા જો અપને શૈખ પર એ’તિરાઝ કરે ફિર ફલાહ (યા’ની કામ્યાબી) પાએ, શૈખ કે તસરુફાત સે જો કુછ ઈસે સહીહ મા’લૂમ ન હોતે હોં ઉન મેં ખિઝર عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام કે વાકિઆત યાદ કર લે ક્યૂંકે ઉન સે વોહ બાતેં સાદિર હોતી થીં, બ ઝાહિર જિન પર સપ્ત એ’તિરાઝ થા (જૈસે મિસ્કીનોં કી કશ્તી મેં સૂરાખ કર દેના, બે ગુનાહ બચ્ચે કો કત્લ કર દેના) ફિર જબ વોહ ઉસ કી વજહ બતાતે થે ઝાહિર હો જાતા થા કે હક યેહી થા, જો ઉન્હોં ને કહા, યૂં હી મુરીદ કો યકીન રખના યાહિયે કે શૈખ કા જો ફે’લ મુઝે સહીહ મા’લૂમ નહીં હોતા, શૈખ કે પાસ ઉસ કી સિહ્હત પર દલીલે કર્ઈ હૈ.” હઝરતે સય્યિદુના ઈમામ અબુલ કાસિમ કુશૈરી عَلَيْهِ الرَّحْمَةُ وَاللَّهُ تَعَالَى “રિસાલએ કુશૈરિયા” મેં ફરમાતે હેં : મેં ને હઝરતે સય્યિદુના અબૂ અબ્દુરહમાન સુ-લમી عَلَيْهِ الرَّحْمَةُ وَاللَّهُ الْفَوَى કો ફરમાતે સુના, ઉન સે ઉન કે શૈખ હઝરતે અબૂ સહ્લ સા’લૂકી عَلَيْهِ الرَّحْمَةُ وَاللَّهُ تَعَالَى ને ફરમાયા : જો અપને પીર સે કિસી બાત મેં “ક્યૂં !” કહેગા કભી ફલાહ ન પાએગા. [رسالته شريه ص 362]

(ફતાવા ર-ઝવિયા જિ. 21, સ. 510 તા 511)

પીરે કામિલ ઓર પીરે નાકિસ

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! બયાન કર્દા સરકારે આ’લા હઝરત عَلَيْهِ الرَّحْمَةُ وَاللَّهُ تَعَالَى કા મુબારક ફતવા સિફ જામેએ શરાઈત પીર યા’ની પીરે કામિલ કે બારે મેં હૈ. જો પીર નબિચ્ચે કરીમ કા ગુસ્તાખ

इरमाने मुखडा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुइद पाक पढा अल्लाह (उस) पर दस रकमतें बेजता है. (مسلم)

डो वोड मुरतद है और जो किसी सडाभी كِي رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की तौडीन करता डो वोड गुमराड व बढ मजडब है औसों का मुरीद बनना ना जाईज व गुनाह है नीज जो पीर ખુલ्लम ખુल्ला गुनाहे कबीरा का मुर-तकिब डो या गुनाहे सगीरा पर ईस्सार करने वाला डो वोड इंसिके मो'लिन कडलाता है. म-सलन अलल अे'लान नमाजें कजा करता डो, नशा करता डो, गन्दी गालियां बकता डो, बे पर्दा ખवातीन के डुजूम में बैठता डो, औरतों से हाथ युमवाता या पाउं दबवाता डो, अलानिया इल्में डिरामे देખता डो, दाढी मुंडाता या अेक मुट्टी से घटाता डो वोड इंसिके मो'लिन है, औसे पीर की बैअत जाईज नहीं. देખलाल कर मुरीद बनना याहिये. युनान्हे दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-अतुल मदीना की मत्बूआ बडारे शरीअत जिल्ल अक्वल सईहा 278 पर सदरुशशरीअड, बढरुतररीकड डरते अल्लामा मौलाना मुइती मुहम्मद अमजद अली आ'अमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي इरमाते हैं : पीरी के लिये यार⁴ शर्ते हैं, कबल अज बैअत उन का लिहाज इर्ज है : **﴿1﴾** सुन्नी सडीडुल अकीदा डो **﴿2﴾** ईतना ईल्म रખता डो के अपनी जरूरिय्यात के मसाईल किताबों से निकाल सके **﴿3﴾** इंसिके मो'लिन न डो **﴿4﴾** उस का सिद्विसला नभी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तक मुत्तसिल (या'नी मिला डुवा) डो. (बडारे शरीअत, इतावा 2-अविय्या जि. 21, स. 603) अगर किसी पीर के अन्दर इन यारों में से अेक भी शर्त कम डो तो उस का मुरीद बनना जाईज नहीं. अगर ला ईल्मी में किसी ने औसे पीर से बैअत कर ली डो जिस में कोई शर्त कम डो तो उस की बैअत तोड देना जरूरी है, ईस के लिये "पीरे नाकिस" को खबर देने की हाजत नहीं, ईतना कड देना ही काई है के मैं डुलां से बैअत तोडता हूं,

इरमाने मुस्ताहा : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى غِيُورٌ وَإِيْرَسَلْمُ : जो शपस मुज पर हुइदे पाक पढना भूल गया वोड जन्त का रास्ता भूल गया. (त्रान)

बलके पीर से अे'तिकाद उठ जाने की सूरत में भुद ही बैअत टूट जाती है. अब किसी भी जामेअे शराईत पीर से बैअत कर सकता है और इस पीरे कामिल को अताने की हाजत नहीं के मैं कुलां की बैअत तोड कर आप का मुरीद हुवा हूं.

कामिल पीर की बैअत तोडने के गुक्साणात

बिला वजहे शर-ई पीरे कामिल, जामेअे शराईत की बैअत तोडना अज इअे तरीकत सप्त मलइमी और अज इअे शरीअत भी सप्त मन्नूअ है. इस बारे में तरीकत की किताबों में औलियाअे किराम के बीसियों अकवाल देभे जा सकते हैं. शरीअत में मन्नूअ होने की वजह येह है के शरअन अेहसान का बदला कम अज कम शुक्रिया अदा करना है. पीरे कामिल का मुरीद होने से आदमी को औलियाअे किराम के सिखिले के साथ निस्अत हासिल हो जाती है नीज इैज का अेक सिखिलेवा जरी होता है और राहे तरीकत की बहुत सी मुश्किलात हल होती हैं और असा अवकात तो जिन्दगी में अेक म-दनी ईन्किलाब अरपा हो जाता है, इन सब चीजों के मुकाबले में शुक्रिया अदा करने के अजामे बैअत ही तोड देना यकीनन सप्त ना शुकी है और ना शुकी शरअन मन्नूअ है युनान्ये हदीस में इरमाया गया : **مَنْ لَمْ يَشْكُرِ النَّاسَ لَمْ يَشْكُرِ اللَّهَ** जिस ने लोगों का शुक्र अदा नहीं किया उस ने अदलाह एउुजल का शुक्र भी अदा नहीं किया. (त्रोइय ज ३ व ३८६ हदीथ १९६२) नीज जब अेक अरतबा आदमी किसी पीरे कामिल की बैअत हो जाता है तो इैज का सिखिलेवा शुइअ हो जाता है अगर्थे मुरीदे नाकिस को वोह नजर न आअे. तो जब इैज का सिखिलेवा शुइअ हो युका तो उसे अर करार रअना याहिये क्यूंके हदीसे मुअारक में है के **فَلْيَلْزَمَهُ فِى شَيْءٍ** या'नी जिस को किसी शै

इरमाने मुसलमान : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइद पाक न पढा तलकीक वोड बढ अप्त हो गया. (उंन)

से रिज़्क मिले वोड उसे लाज़िम पकड ले. (شُعَبُ الْإِيمَانِ ج ٢ ص ٨٩ حديث ١٢٤١) लिहाज़ा जब अेक जगड से झैज मिल रहा है तो उसे लाज़िम पकडना याहिये. येड बात भी याद रघने के काबिल है के झी जमाना जब कोई किसी की बैअत तोडता है तो दो थीजें आम सी हैं बटके अेक तीसरी थीज भी. पहली दो थीजें तो येड हैं के बैअत तोडने वाला अपने साबिका पीर को लकीर समजते हुअे बैअत तोडता है और मुसल्मान और भुसूसन पीरे कामिल हो लकीर समजना हराम और सप्त मोलदिक या'नी ललाकत में डालने वाला है. दूसरी बात के उभूमन बैअत तोडने वाले बिल कस्द (या'नी जान बूज कर) पीर को र्छा पडोंयाते हैं और येड दूसरा हराम है के मुसल्मान को र्छा देना हराम है. तीसरी थीज येड है के उभूमन बैअत तोडने वाले साबिका पीर की गीबत और उस के बारे में बढ गुमानी का शिकार होते हैं और यूं गुनाहों का सिद्धिसिला दराज से दराज तर होता यला जाता है. बहर डाल आङ्घियत व नजात र्छसी में है के जब अेक दर को मजबूती से थाम ले तो उसे थामे रघे और बिला वजह आवारा गर्दी और परेशान नजरी का शिकार न हो.

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

कादिरियों के लिये बिशारत के अगदादी डूल

“अड्जतुल असरार” में है : पीरों के पीर, पीर दस्त गीर, रोशन जमीर, कुल्बे रब्बानी, मडबूबे सुब्हानी, पीरे ला सानी, किन्दीले नूरानी, शडबाजे ला मकानी, अशशैष अबू मुहम्मद सय्यिद अब्दुल कादिर जलानी كَدِيرِ بْنِ الرَّبَّانِ का इरमाने बिशारत निशान है : मुजे अेक अहुत अडा रजिस्टर दिया गया जिस में मेरे मुसाहिलों

इरमाने मुरीद : حَسْبِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَعَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुबह और दस मरतबा शाम दुरुदे पाक पढा उसे क्रियामत के दिन मेरी शक्रात मिलेगी. (अ. १/१)

और मेरे क्रियामत तक होने वाले मुरीदों के नाम दर्ज थे और कहा गया के येह सारे अफ़राद तुम्हारे हवाले कर दिये गये हैं. इरमाते हैं : मैं ने दारोगये जहन्नम से इस्तिफ़सार किया (या'नी पूछा) : क्या जहन्नम में मेरा कोई मुरीद भी है ? उन्हों ने जवाब दिया : "नहीं." आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने मज़ीद इरमाया : मुझे अपने परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की इज़्ज़त व जलाल की कसम ! मेरा दस्ते हिमायत मेरे मुरीद पर इस तरह है जिस तरह आस्मान ज़मीन पर साया कुनां है. अगर मेरा मुरीद अख़्श न भी हो तो क्या हुवा, اَلْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ मैं तो अख़्श हूं, मुझे अपने पालने वाले की इज़्ज़त व जलाल की कसम ! मैं उस वक्त तक अपने रब عَزَّوَجَلَّ की भारगाह से न हटूंगा जब तक अपने अेक अेक मुरीद को दाभिले जन्नत न करवा लूं.

(بَهْجَةُ الْأَسْرَارِ لِلشَّطْنُونِي ص ۱۹۳)

सरकारे बगदाद हुज़ूरे गौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ इरमाते हैं : अद्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से वा'दा इरमाया है के मेरे मुरीदों और मेरे दोस्तों को जन्नत में दाभिल करेगा तो जो कोई अपने आप को मेरा मुरीद कहे मैं उसे कबूल कर के अपने मुरीदों में शामिल कर लेता हूं और उस की तरफ़ अपनी तवज्जोह रખता हूं. मैं ने मुन्कर नकीर से इस बात का अहूद लिया है के वोह कब्र में मेरे मुरीदों को नहीं उराअेंगे.

(مُلَخَّصٌ از بَهْجَةُ الْأَسْرَارِ ص ۱۹۳)

सुना ला तभइ तेरा इरमाने आली !

गुलामों की ढारस बंधी गौसे आ'उम (कवालये बफ़िशश)

इरमाते मुस्तहा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्रद शरीक न पढा उस ने जफा की. (عمر الزاني)

“या गौशे आ'ळम बिगाहे इरम” के सोलह

दुर्रद की निस्बत से मुर्शिद के 16 हुकूक

मेरे आका आ'ला उजरत, एभामे अहले सुन्नत, वलिये ने'मत, अजीमुल ब-र-कत, अजीमुल मर्तबत, परवानअे शम्भे रिसालत, मुजद्विदे दीनो भिद्वलत, डामिये सुन्नत, माडिये बिद्वत, आलिमे शरीअत, पीरे तरीकत, बाईसे जैरो ब-र-कत, उजरते अल्लामा मौलाना अलडाज अल डाकिज अल कारी शाह एभाम अहमद रजा भान عَلَيْهِ وَحَمَةُ الرَّحْمَنِ इरमाते हें : मुर्शिद के हुकूक मुरीद पर शुमार से (बी) अऊजूं (या'नी बढ कर) हें, जुलासा येह है के (मुरीद) **१** एन (या'नी मुर्शिद) के हाथ में “मुर्दा ब दस्ते जिन्दा” (या'नी जिन्दा के हाथों में मुर्दा की तरह) डो कर रहे **२** एन की रिजा को अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की रिजा, एन की नाजुशी को अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की नाजुशी जाने **३** एन्हें अपने हुक में तमाम औलियाअे जमाना से बेहतर समजे **४** अगर कोई ने'मत ब जाडिर दूसरे से मिले तो बी उसे (अपने) मुर्शिद डी की अता और एन्हीं की नजरे तवज्जोह

इरमाने मुखला : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : श्री मुज पर रोजे जुमुआ दुइद शरीफ पड़ेगा मे क्रियामत के दिन उस की शक्राअत करुंगा. (क्र.अ.ल.)

का सदका जाने ﴿5﴾ माल, औलाद, जान, सब एन पर तसदुक करने (या'नी लुटाने) को तय्यार रहे ﴿6﴾ एन की जो बात अपनी नजर में भिलाके शर-अ बलके مَعَادًا لِلَّهِ عَزَّ وَجَلَّ कबीरा (गुनाह) मा'लूम हो उस पर भी न ऐ'तिराज करे, न दिल में बह गुमानी को जगह दे बलके यकीन जाने के मेरी समज की ग-लती है ﴿7﴾ दूसरे को अगर आस्मान पर उडता देभे जब भी (अपने) मुर्शिद के सिवा दूसरे के हाथ में हाथ देने को सप्त आग जाने, अक बाप से दूसरा बाप न बनाओे ﴿8﴾ एन के हुजूर बात न करे ﴿9﴾ हंसना तो बडी चीज है एन के सामने आंघ, कान, दिल, हमा तन (या'नी मुकम्मल तौर पर) एन्हीं की तरफ मसरुफ रहे ﴿10﴾ जो वोह पूछें निहायत ही नर्म आवाज से अ कमावे अदब बता कर जल्द आभोश हो जाओे ﴿11﴾ एन के कपडों, एन के बैठने की जगह, एन की औलाद, एन के मकान, एन के महल्ले, एन के शहर की ता'जीम करे ﴿12﴾ जो वोह हुकम दें "क्यूं !" न कहे (और बजा लाने में) देर न करे (बलके) सब कामों पर उसे तक्दीम (या'नी अव्वलिय्यत) देे ﴿13﴾ एन की गैबत

इरमान मुसलहा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुइदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तदारत है. (इस्लाम)

(या'नी गैर मौजू-दगी) में भी एन के बैठने की जगह न बैठे

﴿14﴾ एन की मौत के आ'द भी एन की मौजा से निकाल न करे ﴿15﴾

रोजाना अगर वोह जिन्दा हैं, एन की सलामती व आइय्यत की

दुआ भ कसरत करता रहे और अगर एन्तिकाल हो गया तो रोजाना

एन के नाम पर इतिहा व दुइद का सवाभ पछोंयाये ﴿16﴾ एन के

दोस्त का दोस्त, एन के दुश्मन का दुश्मन रहे. गरज अल्लाह व

रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के आ'द एन के एलाके (या'नी

तअल्लुक) को तमाम जहान के एलाके (या'नी तअल्लुक) पर दिल से

तरजह दे और एसी पर कारबन्द रहे वगैरा वगैरा. जब येह

ऐसा होगा तो हर वक्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ व सय्यिदे आलम

رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى की मद्दद व इतराते मशाएभे किराम اللهُ تَعَالَى की मद्दद

जिन्दगी में, नज़्म में, कब्र में, उशर में, भीजान पर, सिरात पर,

हौज पर हर जगह एस के साथ रहेगी. एस के मुशिद अगर खुद

कुछ नहीं तो एन के मुशिद तो कुछ हैं या मुशिद के मुशिद यहां तक के

साहिबे सिस्सिला (कादिरिया) हुजुरे पुरनूर गौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ

इर येह (कादिरि) सिस्सिला मौला अली كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ और उन से सय्यिदुल मुर-सलीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ और उन से अल्लाहु

ફરમાને મુસ્લિમ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : તુમ જહાં ભી હા મુઝ પર દુરુદ પઢો કે તુમ્હારા દુરુદ મુઝ તક પહોંચતા હૈ. (ટીપ્પણ)

રબ્બુલ આ-લમીન عَزَّ وَجَلَّ તક મુસલ્લલ ચલા ગયા હૈ. હાં યેહ ઝરૂર હૈ કે મુશિદ ચારોં શરાઈતે બૈઅત કા જામેઅ હો ફિર ઈન કા હુસ્ને એ'તિકાદ સબ કુછ ફલ લા સકતા હૈ. **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ - وَاللَّهُ تَعَالَى أَعْلَمُ**
(ફતાવા ર-ઝવિયા, જિ. 24, સ. 369)

તૂ હૈ વોહ ગૌસ¹ કે હર ગૌસ હૈ શૈદા તેરા

તૂ હૈ વોહ ગૌસ કે હર ગૌસ² હૈ પ્યાસા તેરા

તાલિબે ગમે મદીના વ
બકીઅ વ મગ્ફિરત વ
બે હિસાબ જન્નતુલ
ફિરદૌસ મેં આકા કા પડોસ



4 રબીઉલ ગૌસ 1427 હિ.

મ-દની ફૂલ

ઐ કાશ ! રોઝી મેં કસરત કી મહબ્બત સે
ઝિયાદા હમ નેકિયોં મેં બ-ર-કત કી હસરત કરતે
ઔર ઈસ કે લિયે ભી કોઈ વિદઈ કરતે.

الذین

૧ : ગૌસ યા'ની ફરિયાદ સુનને વાલા

૨ : ગૌસ યા'ની કૂંઆં

नजारा हो दरबार का गौसे आ'जम

नजारा हो दरबार का गौसे आ'जम टिपा नीला गुम्बद टिपा गौसे आ'जम

मुझे जमे उलकत पिदा गौसे आ'जम रहुं मस्तो बे फुद सदा गौसे आ'जम

करम कीजिये फिर मैं बगदाद आऊँ मेरे पीर का वासिता गौसे आ'जम

मुझे अपनी चौपट का कुत्ता बना लो हमेशा रहुं बा वफा गौसे आ'जम

तेरे आस्तां का हूँ मंगता गुजारा है टुकड़ों पे तेरे मेरा गौसे आ'जम

गुनाहों का भार अपने सर पर उठा कर किट्टे कब तक जा ब जा गौसे आ'जम

धलाज आबिर ऐ मुर्शिदी कब करेंगे! गुनाहों के भीमार का गौसे आ'जम

गुनहगार हूँ गर अजाबों ने घेरा तो डोगा मेरा डाये! क्या गौसे आ'जम

नजर मुर्शिदी तेरी जानिब लगी है अजाबों से लेना बया गौसे आ'जम

जहाँ में जियूँ सुन्नतों के मुताबिक मदीने में हो पातिमा गौसे आ'जम

हो अत्तार की बे हिसाब बज्जिश आका

येह इरमाओं उक से हुआ गौसे आ'जम

वेह रिआला पढ कर दूसरे की हे टीबिये

शादी गमी की तकरीबात, ईजतिमाआत, आ'रास और
 जुलूसे मीलाद वगैरा में मक-त-बतुल मदीना के शाअेअ कर्दा
 रसाईल और म-दनी झूलों पर मुश्तमिल पेम्फ्लेट तकसीम कर
 के सवाब कमाईये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोहफे में देने
 के लिये अपनी दुकानों पर ली रसाईल रखने का मा'मूल
 बनाईये, अज्बार इरोशों या बख्यों के जरीअे अपने महल्ले के
 घर घर में माहाना कम अज कम अेक अदद सुन्नतों लरा रिसाला
 या म-दनी झूलों का पेम्फ्लेट पड़ोंया कर नेकी की दा'वत की धूमें
 मयाईये और ખૂબ सवाब कमाईये.